विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का संवेगात्मक बुद्धि और उपलब्धि अभिप्रेरण के साथ संबंध

निशा मिश्रा*
पूनम शर्मा**

वर्तमान समय में सफलता उच्च स्तरीय जीवन का पर्याय बन गई है। आज हर व्यक्ति अपनी सफलता के लिए निरंतर प्रयास करता रहता है। विभिन्न विद्वानों एवं शोधकों का मानना है कि शैक्षिक सफलता सफल भविष्य की सूचक है, इसी कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि शोधकों को सदैव आकर्षित करती रही है। शिक्षा जगत में हुए शोधों से यह पाया गया कि शैक्षिक उपलब्धि कई संज्ञानात्मक तथा गैर-संज्ञानात्मक कारकों द्वारा प्रभावित होती है। यह शोध पत्र संवेगात्मक बुद्धि तथा उपलब्धि अभिप्रेरण (गैर-संज्ञानात्मक) जैसे कारकों का शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध को प्रदर्शित करता है। यह शोध कार्य दिल्ली राजधानी क्षेत्र के सरकारी और गैर-सरकारी तथा आवासीय और गैर-आवासीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11वीं के 892 विद्यार्थियों के न्यादर्श पर किया गया था। संवेगात्मक बुद्धि गुणांक का मापन करने के लिए शोधकों ने वर्ष (2014) में निर्मित अरुण कुमार के "इमोशनल इंटेलिजेंस स्केल" का प्रयोग किया। उपलब्धि अभिप्रेरण की गणना करने हेतु प्रतिभा देओ (2011) द्वारा निर्मित "एचीवमेंट मोटीवेशन स्केल" का प्रयोग किया गया तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों के दसवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा में प्राप्त सी.जी.पी.ए (क्यूमूलेटिव ग्रेड पॉइंट्स एवरेज) अंकों को लिया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् परिणाम प्राप्त हुए कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का संवेगात्मक बुद्धि तथा उपलब्धि अभिप्रेरण के साथ सार्थक संबंध है।

मनुष्य द्वारा प्राप्त की गई सफलता उसके जीवन में अहम भूमिका का निर्वहन करती है। यह मानव द्वारा की गई कठोर मेहनत, उसकी सच्ची निष्ठा और लगन, उसकी योग्यता, सकारात्मक व्यवहार तथा बौद्धिक स्तर को प्रमाणित करती है। सफलता मनुष्य को प्रगति के पथ पर नियमित रूप से अग्रसर रखने का कार्य करती है। अतः कामयाबी के उच्चतम पायदान पर पहुँचना मानव की प्रमुख अभिलाषाओं में से एक है। सफलता को बहुत-से कारक प्रभावित करते हैं; जहाँ संज्ञानात्मक कारक अपनी प्रभावशीलता के लिए प्रसिद्ध है, वहीं गैर-संज्ञानात्मक कारकों का मूल्य भी कम नहीं आँका जा सकता। विश्व स्तरीय

* *सहायक प्राध्यापक*, लीलावती मुंशी कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, के. जी. मार्ग, नयी दिल्ली – 110 001
** *सहायक प्राध्यापक*, लीलावती मुंशी कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, के. जी. मार्ग, नयी दिल्ली – 110 001

शोध कार्यों ने गैर संज्ञानात्मक कारकों, जैसे—संवेगात्मक बुद्धि, अभिप्रेरण, पढ़ने की आदत, व्यक्तित्व, वातावरण, अभिभावकों का व्यवहार, आदि के महत्व को स्वीकार किया है।

संवेगात्मक बुद्धि

प्रकृति ने इस संपूर्ण जीव जगत को भावना प्रधान बनाया है। भावनाएँ मनुष्य के व्यक्तित्व की पहचान होती हैं। अतः कामयाबी के उच्चतम पायदान पर कभी तो ये उसकी सफलता का पर्याय बन जाती हैं, तो कभी पैरों की बेड़ियाँ। बबली आर. रश्मि एस. व सपना एस. (2013), युसुफ, एच. टी., युसुफ, ए., गंबरी, ए. आई. (2015), भदौरिया, पी. (2013), मैज़तुल अकमल मोहम्मद और अन्य के द्वारा किए गए (2013) अनेक शोधों ने यह सिद्ध किया है कि जो व्यक्ति अपने संवेगों पर अवसरानुकूल नियंत्रण रखने में सफल हो जाता है, वह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सफलता का पताका फहरा पाता है। भावनात्मक बुद्धि जहाँ एक ओर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का महत्वपूर्ण सूचक है, वहीं यह विद्यार्थियों की शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक स्वस्थता का भी परिचायक है। अपने इसी गुण के कारण वर्तमान कुछ दशकों से यह बुद्धिलब्धि गुणांक से अधिक महत्वपूर्ण माना जाने लगा है (गोलमेन, डी., 1995)।

आर. बार-ऑन सन (1980) ने भी पाया कि मनुष्य के जीवन में बहुत-से गैर-संज्ञानात्मक कारक सफलता को प्रभावित करते हैं, फिर उन्होंने वर्ष (1985) में *इमोशनल क्योशेन्ट्स* (संवेगात्मक गुणांक) शब्द की व्याख्या की और संवेगात्मक बुद्धि को विशिष्ट योग्यता के रूप में बताते हुए कहा कि, यह योग्यता न केवल मानव में समझौता करने की काबलियत पैदा करती है, बल्कि स्वयं पर नियंत्रण रखते हुए प्रगति के पथ पर आगे बढ़ना भी सिखाती है। हिग्स और डूलेविच्ज़ (Higgs and Dulewicz 1999) ने *इमोशनल इंटेलिजेंस* को विस्तृत रूप से पारिभाषित किया और माना कि संवेगात्मक बुद्धि अपनी भावनाओं को समझने और उनसे प्रभावित हुए बिना उन्हें सँभालने की योग्यता है, जो उन्हें कार्य पूर्ण करने, संबंधों को सँभालने व दूसरों की भावनाओं को समझने की शक्ति देती है।

वैसे तो भावनात्मक बुद्धि विषय पर बहुत काम हो रहा था, परंतु इस शब्द और इस सिद्धांत को शिक्षा व व्यावसायिक जगत में प्रसिद्ध करने का श्रेय 'डेनियल गोलमेन' को जाता है। उन्होंने वर्ष 1995 में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *इमोशनल इंटेलिजेंस—व्हाई इट कैन मैटर मोर दैन आई क्यू* (गोलमेन, डी., 1995) के द्वारा इस सिद्धांत को फैला कर शैक्षिक व व्यावसायिक जगत में शोध के नए आयाम खोल दिए। उन्होंने अपनी पुस्तक *वॉट मेक्स ए लीडर* के द्वारा, प्रतिभा व समझ के महत्व के साथ-साथ सफलता और संतोष के लिए भावनात्मक समझ के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

भावनात्मक बुद्धि गुणांक का अर्थ उस योग्यता से है जिसके कारण मानव अपनी भिन्न-भिन्न भावनाओं, जैसे—प्रेम, खुशी, गुस्सा, उल्लास, जोश, चिंता, नफ़रत आदि को पहचान कर, समझदारी व विवेकपूर्ण रूप से उन्हें निर्देशित करता है ताकि उसकी प्रगति सुनिश्चित हो सके। साथ ही इस योग्यता के बल पर वह दूसरों के साथ उचित व्यवहार का प्रदर्शन करता है जिससे वह अपने

चारों ओर एक स्वस्थ वातावरण को तैयार करने में सक्षम हो पाता है। यह वातावरण उसकी भविष्य की सफलताओं को सुनिश्चित करने में सहायक रहता है। भावनात्मक बुद्धि मनुष्य के चहुँमुखी विकास के लिए आवश्यक योग्यता है। यह मनुष्य को समाज, परिवार व्यवसाय तथा व्यक्तिगत जीवन में अनेक लाभ पहुँचाती है। अपने संवेगों को समझना, उन पर काबू पाना, फिर उनका उचित प्रबंधन व संचालन करना ही भावनात्मक समझ है। व्यक्ति अपनी 'भावनात्मक समझ' का प्रयोग कर अपने कुशल व्यवहार का उदाहरण रख सकता है तथा अपने समाज व परिवेश में विशिष्ट स्थान प्राप्त कर सकता है। शोधों द्वारा यह प्रमाणित हो गया है कि मानव में बुद्धि लब्धि गुणांक जन्मजात होता है तथा इसे बढ़ाया नहीं जा सकता, परंतु संवेगात्मक बुद्धि की मुख्य विशेषता यह है कि इसका विकास किया जा सकता है तथा यह मानव की सफलता को अधिक प्रभावित करती है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण वर्तमान समय में यह शोधकों के मध्य आकर्षण का बिंदु बनी हुई है।

व्यक्ति के भावनात्मक पक्ष पर आधारित योग्यताओं व शील गुणों के समूह ही भावनात्मक बुद्धि है। संवेगात्मक बुद्धि की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं —

- भावनात्मक बुद्धि, सामाजिक समझ का ही एक प्रकार है जो इनसान को अपने तथा दूसरों के विचारों को समझने की समझ पैदा करती है।
- यह बुद्धि विभेदक क्षमता उत्पन्न करती है। इससे मिली सूचनाओं के आधार पर कोई मनुष्य अपने चिंतन एवं क्रियाओं को निर्देशित करता है।
- भावनात्मक समझ संवेगों को समझने, पहचानने, निर्देशित, प्रबंधित, संचालित करने में सहायता करती है।
- यह आई. क्यू. से अधिक महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यह जीवन के अनेक क्षेत्रों में सफलता दिलाने में सहायक है।

उपलब्धि अभिप्रेरण

आज के प्रतियोगितावादी व लक्ष्य-केंद्रित विश्व में हर व्यक्ति की कामना उच्च उपलब्धि की प्राप्ति होती है। कार्य को सफलतापूर्वक उच्च उपलब्धि के साथ पूरा करना व्यक्तिगत प्रगति ही नहीं, वरन् राष्ट्र की तरक्की का द्योतक है। अभिप्रेरण मनुष्य की विभिन्न इच्छाओं, कार्यों और लक्ष्यों का प्रमुख कारण है।

उपलब्धि अभिप्रेरण एक मनोवैज्ञानिक आंतरिक चालक है जो एक व्यक्ति को सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए निरंतर प्रेरित करता है (मैक क्लेल्लैंड, 1961; मैक क्लेल्लैंड और विंटर 1969)। इसके अतिरिक्त उपलब्धि अभिप्रेरण दूसरों के साथ तुलना और एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करने की मनोवृति भी है। उपलब्धि अभिप्रेरण को बेहतर प्रदर्शन तथा कामयाबी के लिए किए गए निरंतर प्रयास के रूप में समझा जा सकता है (मैक क्लेल्लैंड, 1985)। यह मानवीय समस्त अभिप्रेरण का केंद्र बिंदु है, क्योंकि उपलब्धि के लिए प्रेरित मनुष्य किसी भी बाधा से घबराता नहीं है और अपने लक्ष्य के प्रति सदैव उत्साहित रहता है तथा दूसरों से बेहतर काम करने के लिए, उन्हें पछाड़ने के लिए और अपने अद्भुत कार्यों से सभी को चकित करने के लिए तत्पर रहता है। [स्मिदत (Schmidt) और फ्रीज़, 1997]। अमेरीकी मनोवैज्ञानिक डेविड मैक क्लेल्लैंड ने अभिप्रेरणात्मक आवश्यकताओं से संबंधित शोध में उपलब्धि की प्रेरणा (उपलब्धि अभिप्रेरण) को

मुख्य आवश्यकता माना। उन्होंने माना कि लोगों में कुछ पाने की चाह सदैव रहती है। उन्होंने उपलब्धि अभिप्रेरण की चार मुख्य विशेषताएँ बताईं —

- औसत जटिलता वाले कार्य के लिए प्रयासरत रहना;
- स्वयं की उपलब्धि के प्रति ज़िम्मेदारी;
- प्रतिपुष्टि की आवश्यकता; और
- नवाचार और रचनात्मकता का प्रयोग।

समस्यात्मक कथन

इस शोध अध्ययन का समस्या कथन था, "विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का संवेगात्मक बुद्धि और उपलब्धि अभिप्रेरण के साथ संबंध।"

शोध का औचित्य

जहाँ एक ओर मानव की भावनाएँ उसके काम, व्यवहार और शिक्षा में हस्तक्षेप करती हैं, वहीं उसका अभिप्रेरण का स्तर उसकी सफलता का निर्धारण करता है। संवेगात्मक बुद्धि मानव को अपने संवेगों को नियंत्रित करके उचित निर्णय लेने में सहयोग करती है तो उच्च अभिप्रेरण निरंतर सफलता की दिशा में स्वयं को अग्रसर रहने के लिए प्रेरित रखती है। अतः ये दोनों ही गैर-संज्ञानात्मक चर, विद्यार्थियों की उपलब्धि के प्रमुख निर्धारक हैं। इन चरों पर आधारित अनेक शोध कार्य हुए हैं। परंतु दोनों चरों का एक साथ अध्ययन कम हुआ है। अतःशोधक द्वारा दिल्ली राजधानी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और उनकी उपलब्धि के साथ संबंधों पर अध्ययन किया गया। इस शोध का मुख्य उद्देश्य संवेगात्मक बुद्धि तथा उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध को देखना था।

साहित्य की समीक्षा

संवेगात्मक बुद्धि

अमालू, एन. मेलविना (2018) ने वर्णनात्मक शोध सर्वेक्षण द्वारा प्रमाणित किया कि संवेगात्मक बुद्धि के सभी तत्व, जैसे— संवेगों का प्रबंधन, स्वयं का अभिप्रेरण, सामाजिक कौशल, समानुभूति एवं आत्म जागरुक शैक्षिक उपलब्धि पर सम्मिलित रूप से प्रभाव डालते हैं। अनुसंधान से आए परिणामों के आधार पर शोधक ने वर्तमान शैक्षिक कार्यक्रम में संवेगात्मक बुद्धि को बढ़ाने के लिए कार्यक्रमों को रखने की सिफ़ारिशें की। सप्रे, मिनी (2018) ने अपने शोध कार्य में यह पाया कि *इमोशनल इंटेलिजेंस* का चिंता, तनाव और उदासी के साथ विपरीत संबंध है। ये तत्व मनुष्य के संवेगों को स्थिर नहीं रहने देते तथा ये उनके कार्यों को प्रभावित करते हैं। एक अन्य शोध के अनुसार (बबली आर., रश्मि एस. और सपना एस. 2013) *इमोशनल इंटेलिजेंस* तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच में सकारात्मक संबंध है। साथ ही उनकी खोज इस बात का भी खुलासा करती है कि उपलब्धि अभिप्रेरण और संवेगात्मक बुद्धि में धनात्मक संबंध है। यह शोध कार्य इस बात का भी पक्षधर है कि उच्च, औसत तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरण वाले विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि गुणांक भी भिन्न होता है। संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता के प्रमुख कारणों में से एक है। शोध यह तथ्य भी प्रदर्शित करता है कि लड़कियों का माध्य स्कोर, लड़कों के माध्य स्कोर से कम है। भदौरिया, प्रीति (2013) इस बात पर ज़ोर देती हैं कि भावनात्मक बुद्धि व सामाजिक कौशल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ-साथ

उनकी भविष्य की उपलब्धि पर भी अपना प्रभाव डालती है। इस अन्वेषण के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि के अभाव में विद्यार्थियों की सफलता की संभावना कम होती है, साथ ही इसकी कमी कमज़ोर व्यक्तित्व व योग्यताओं के अभाव की ओर इंगित करती है।

मैज़तुल, अकमल मोहम्मद, मोहज़न नोर्हस्लिंदा हसन, नोर्हफ़ज़ाह अब्दुल हलील (2013) ने अपने शोध द्वारा सिफ़ारिश की कि संवेगात्मक बुद्धि के मूल्यों का परिपालन महत्वपूर्ण है तथा शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में इसकी उपयोगिता को स्वीकारा है। आँकड़ों से आए नतीजों से उन्होंने यह भी खुलासा किया कि संवेगात्मक बुद्धि के दो कार्यक्षेत्रों (भावों की समझ और स्वयं के भावों का मूल्यांकन) का सीधा संबंध विद्यार्थियों की उपलब्धि के साथ है। युसुफ, एच टी., युसुफ, ए., गंबरी, ए. आई. (2015) ने विद्यार्थी-शिक्षकों के संवेगात्मक बुद्धि लब्धि गुणांक का उनकी भविष्य उत्पादकता के प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन में जेंडर के आधार पर संवेगात्मक गुणांक में सार्थक अंतर पाया गया। यह खोज वकालत करती है कि भावनात्मक रूप से बुद्धिमान विद्यार्थी-शिक्षक अधिक सफलता प्राप्त करने वाला होता है। लब्बी एस. लूनेंबुर्ग एफ़. सी. स्लेट जे. आर. (2012) खोजकर्ताओं ने इस बात को स्वीकारा कि संवेगात्मक बुद्धि शैक्षिक योग्यताओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस खोज में यह पाया गया है कि विद्यालयों के प्रबंधकों द्वारा संवेगात्मक बौद्धिक कौशल के विकास पर कम ध्यान दिया जा रहा है। अनुसंधानकर्ताओं ने विद्यालयों में संवेगात्मक बौद्धिक कौशल के सफल परिपालन के लिए विद्यालय के प्रधानाचार्य को ज़िम्मेदार माना है। बा. ए. फ़ातुम (2008) ने अपने शोध कार्य द्वारा यह खुलासा किया कि जिन विद्यार्थियों ने संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण में अधिक योग्यता प्रदर्शित की, वे उसकी झलक अन्य शैक्षिक परीक्षाओं में प्रदर्शित करने में भी सफल रहे। एक विशेष शोध के अनुसार वो छात्र जो शैक्षिक क्षेत्र में खतरे में हैं यानि जिनके फ़ेल होने या विद्यालय छोड़ने का डर बना रहता है, उनकी संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव भी उनकी उपलब्धि पर पड़ता है। इसके अतिरिक्त इस शोध के परिणाम इस बात की भी वकालत करते हैं कि शिक्षकों के भावनात्मक बुद्धि लब्धि गुणांक और विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में गहरा संबंध है (लेस्ली के, 2007)।

उपलब्धि अभिप्रेरण

मैक क्लेल्लैंड, 1961; मैक क्लेल्लैंड और विंटर 1961 के अनुसार उपलब्धि की आवश्यकता मनोवैज्ञानिक है जो मनुष्य की सफलता और लक्ष्य प्राप्ति में बहुत महत्वपूर्ण है। कुमारी कल्पना और कासिम एस.एच. (2015) ने अपने शोध कार्य में पाया कि उपलब्धि अभिप्रेरण शैक्षिक उपलब्धि के लिए बहुत आवश्यक है। उन्होंने स्टेकहोल्डर्स, शिक्षाशास्त्रियों, शिक्षकों आदि से सिफ़ारिश की है कि विद्यार्थियों की उपलब्धि को बढ़ाने के लिए उन्हें लगातार प्रोत्साहित करना चाहिए। कोज्मिन्सकी एस. के. (2010) ने उपलब्धि अभिप्रेरण को मनोवैज्ञानिक रूप से परिभाषित किया और विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर और विद्यालयी कार्यक्रम में उनके प्रदर्शन पर अभिप्रेरण के प्रभाव की चर्चा की। इस शोध के अनुसार उपलब्धि अभिप्रेरण, विद्यार्थियों की सफलता और विफलता का महत्वपूर्ण

प्राग्सूचक होता है। सेथ आर. लैंगली, विलियम एम. बार्ट (2017) ने अपने अनुसंधान कार्य से यह जानने का प्रयत्न किया कि उच्च व निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थी किस प्रकार अधिगम विश्वास, स्वयं को संचालित करने, स्वयं को अभिप्रेरित करने में भिन्न हैं? अवान, रिफ़्फ़त-उन-मिसा, नौरीन, गज़ाला और मिस. नाज़ अंजुम (2011) ने अपनी खोज में उपलब्धि अभिप्रेरण व स्वयं की समझ के मध्य संबंधों की जाँच करने का प्रयत्न किया। इस खोज के परिणामों ने खुलासा किया कि दोनों स्वतंत्र चर, विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन से सीधे संबंधित हैं। साथ ही जेंडर के आधार पर सार्थक अंतर भी पाया गया, जिसमें लड़कियों का पलड़ा अधिक भारी था। इलियट और मैक ग्रेगोर (2001) ने अपने उपलब्धि के मॉडल में दो मुख्य लक्ष्यों की व्याख्या की — मास्टरी लक्ष्य और उपलब्धि लक्ष्य। मास्टरी लक्ष्य किसी कार्य को करने में मास्टरी हासिल करना जबकि उपलब्धि लक्ष्य किसी कार्य को दूसरों से बेहतर तरीके से क्रियान्वित करने से है। शोधकों ने वकालत की कि जब भी विद्यार्थी किसी शैक्षिक कार्य में लगे होते हैं, वे अपने लिए लक्ष्यों का निर्धारण करते हैं और ये लक्ष्य उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। मेहर (2008) के अनुसार, उपलब्धि अभिप्रेरण व्यापक रूप से सामाजिक मनोविज्ञान से संबंधित है, क्योंकि ये अधिकतर समूहों में ही होते हैं।

शोध उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करना था —

- क्या संवेगात्मक बुद्धि और उपलब्धि अभिप्रेरण का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक संबंध है?
- क्या लड़कों और लड़कियों की संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है?
- क्या सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है?
- क्या आवासीय और गैर-आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है?

परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की निम्न शून्य परिकल्पनाएँ थीं —

- $H_0$1— संवेगात्मक बुद्धि और उपलब्धि अभिप्रेरण का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक संबंध है।
- $H_0$2— लड़कों और लड़कियों की संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
- $H_0$2(1)— लड़कों और लड़कियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
- $H_0$2(2)— लड़कों और लड़कियों की उपलब्धि अभिप्रेरण में सार्थक अंतर नहीं है।
- $H_0$2(3)— लड़कों और लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
- $H_0$3— सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

- $H_0$3(1)—सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
- $H_0$3(2)—सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरण में सार्थक अंतर नहीं है।
- $H_0$3(3)—सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
- $H_0$4—आवासीय और गैर-आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
- $H_0$4(1)—आवासीय और गैर-आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
- $H_0$4(2)—आवासीय और गैर-आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरण में सार्थक अंतर नहीं है।
- $H_0$4(3)—आवासीय और गैर-आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन का प्रारूप

इस शोध में वर्णनात्मक-सहसंबंध विधि का प्रयोग करके दो स्वतंत्र चरों, संवेगात्मक बुद्धि और उपलब्धि अभिप्रेरण का परतंत्र चर, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ संबंध की जाँच की गई। साथ ही इस शोध कार्य में ये भी ज्ञात करने का प्रयत्न किया गया कि जेंडर, विद्यालयों के प्रकार तथा आवासीय भिन्नता के आधार पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि लब्धि और उपलब्धि अभिप्रेरण में सार्थक अंतर है या नहीं।

सैंपलिंग तकनीक

इस शोध में आँकड़े एकत्रित करने के लिए साधारण यादृच्छिक प्रणाली अपनाई गई थी। दिल्ली राजधानी क्षेत्र से सरकारी तथा गैर-सरकारी (प्राइवेट) विद्यालय के कक्षा 11 के 892 विद्यार्थियों को चुना गया।

न्यादर्श संकलन

न्यादर्श संकलन हेतु प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। दिल्ली राजधानी क्षेत्र के छह सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्र में लगभग 956 प्रश्नावली भेजी गई थी। इनमें से 934 भरी हुई प्रश्नावली प्राप्त हुई। जिसमें से शुद्ध न्यादर्श के रूप में 896 को चुना गया। इसमें 446 लड़कियाँ और 446 लड़के शामिल थे। सरकारी और गैर-सरकारी विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 411 और 481 थी। आवासीय और गैर-आवासीय विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 429 तथा 463 थी।

शोध उपकरण

संवेगात्मक बुद्धि

शोध में संवेगात्मक बुद्धि का परीक्षण करने के लिए अरुण कुमार के द्वारा बनाया गया मानक प्रश्न पत्र 'इमोशनल इंटेलिजेंस स्केल' (2014) का प्रयोग किया गया।

उपलब्धि अभिप्रेरण

उपलब्धि अभिप्रेरण की गणना करने हेतु प्रतिभा देओ द्वारा निर्मित मानक प्रश्न पत्र 'एचीवमेंट मोटिवेशन स्केल' का प्रयोग किया गया।

शैक्षिक उपलब्धि

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए विद्यार्थियों के कक्षा 10 के वार्षिक परीक्षा के अंक (CGPA) एकत्रित किए गए।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं परिणाम

परिकल्पना H_01 — विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और उपलब्धि अभिप्रेरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक संबंध है

तालिका 1 का अवलोकन करने के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि संवेगात्मक बुद्धि और उपलब्धि अभिप्रेरण का शैक्षिक उपलब्धि के साथ धनात्मक सहसंबंध है। यह सहसंबंध 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः प्रथम परिकल्पना कि संवेगात्मक बुद्धि और उपलब्धि अभिप्रेरण का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक संबंध है, स्वीकृत की जाती है। साथ ही, तालिका 1 दर्शाती है कि संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि के साथ एक कमज़ोर सकारात्मक रेखीय संबंध है, जबकि उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत थोड़ा-सा अधिक मज़बूत है। शोधक ने यह पाया कि जहाँ एक ओर संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों को संवेगों पर संतुलन रखकर सफलता की ओर प्रयासरत रखती है, वहीं उपलब्धि के लिए अभिप्रेरित व्यवहार उसे लगातार अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करता है। परंतु कमज़ोर संबंध निश्चित तौर पर इस ओर भी इशारा कर रहा है कि विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अन्य कई आवश्यक कारक भी हैं।

परिकल्पना H_02 — लड़कों और लड़कियों की संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है

तालिका 2 में लेवेंस टेस्ट के परिणामों को ध्यानपूर्वक देखने के बाद ज्ञात होता है कि F मूल्य जो क्रमशः .094, 1.118 और .067 है, जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है और यह प्रदर्शित करता है कि शून्य परिकल्पना कि समूहों में परिवर्तनशीलता समान है, अस्वीकृत नहीं होती है। अतः कहा जा सकता है कि समूहों में सजातीयता विद्यमान है तथा प्रस्तुत चरों में 't' मान की गणना की जा सकती है।

लड़कों और लड़कियों के भावात्मक बुद्धि लब्धि गुणांक व शैक्षिक उपलब्धि का 't' मान 1.528 और 1.258 है, जो .05 के सार्थकता स्तर

तालिका 1 — संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि का पारस्परिक सहसंबंध

		शैक्षिक उपलब्धि	उपलब्धि अभिप्रेरण	संवेगात्मक बुद्धि
संवेगात्मक बुद्धि	पियर्सन सहसंबंध	.263**	.300**	1
	सार्थक (द्वि-पूंछ)	.000	.000	
उपलब्धि अभिप्रेरण	पियर्सन सहसंबंध	.352**	1	.300**
	सार्थक (द्वि-पूंछ)	.000		.000
शैक्षिक उपलब्धि	पियर्सन सहसंबंध	1	.352**	.263**
	सार्थक (द्वि-पूंछ)		.000	.000

** द्वि-पूंछ 0.01 सार्थकता के स्तर पर सार्थक सहसंबंध, N=892

तालिका 2 — लड़कियों और लड़कों के मध्य संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

	विभिन्न पैमाने	लड़कियों (N=446)		लड़के (N=446)		't' मान	लेवेंस टेस्ट मान
		माध्य	*मानक विचलन*	*माध्य*	*मानक विचलन*		
(अ)	संवेगात्मक बुद्धि	73.48	7.36	72.72	7.49	1.528	.094*
(ब)	उपलब्धि अभिप्रेरण	141.85	16.76	132.39	19.17	7.846**	1.118*
(स)	शैक्षिक उपलब्धि	74.98	10.56	74.09	10.60	1.258	.067*

** सार्थकता स्तर= .01, *सार्थकता स्तर= .05

पर सार्थक नहीं है। यह प्रमाणित करता है कि संबद्ध आँकड़ों में लड़कों और लड़कियों की संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः पंक्ति 'अ' और 'स' दर्शाती हैं कि परिकल्पना $H_0 2(1)$, $H_0 2(3)$ कि लड़कों और लड़कियों की संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत नहीं होती है। जबकि पंक्ति 'ब' दर्शाती है कि अभिप्रेरण उपलब्धि गुणांक का 't' मान 7.846 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इसलिए कहा जा सकता है कि परिकल्पना $H_0 2(2)$ कि लड़कों और लड़कियों की अभिप्रेरण उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत होती है।

तालिका 2 को ध्यानपूर्वक देखने के बाद यह भी ज्ञात होता है कि लड़कियों के संवेगात्मक बुद्धि लब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि के अंकों का माध्य क्रमशः 73.48, 141.85 और 74.98 है, तो वहीं लड़कों की संवेगात्मक बुद्धि लब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि के अंकों का माध्य क्रमशः 72.72, 132.39 और 74.09 है। इनका माध्य मूल्य बताता है कि लड़के और लड़कियों के संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। इसके कई कारण हो सकते हैं। यह शोध कार्य राजधानी क्षेत्र में हुआ है, जहाँ वर्तमान दृष्टिकोण में होने वाले परिवर्तन के कारण लैंगिक असमानता में सार्थक अंतर न पाया जाना एक अच्छा सूचक है। अपने संवेगों पर नियंत्रण रखने का जो भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है, वह लड़के और लड़कियों के लिए लगभग समान है। साथ ही शैक्षिक उपलब्धि में समानता का कारण दसवीं कक्षा में दिया गया प्रशिक्षण हो सकता है। परंतु उपलब्धि अभिप्रेरण का माध्य मूल्य बताता है कि लड़कियों का उपलब्धि गुणांक लड़कों की अपेक्षा अधिक है अर्थात् लड़कियाँ उपलब्धि के प्रति अधिक अभिप्रेरित हैं। इसका कारण निश्चित तौर पर लड़कियों के साथ किया जाने वाला व्यवहार है, जिसमें उन्हें अभिप्रेरित किया जाता रहता है। आज भी समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए व सफलता प्राप्त करने के लिए लड़कियों को अधिक संघर्ष करना पड़ता है और किशोरावस्था में ही वह इस बात से भली-भाँति परिचित हो जाती हैं।

परिकल्पना H_03 — सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है

तालिका 3 में लेवेंस टेस्ट के परिणामों को ध्यानपूर्वक देखने के बाद ज्ञात होता है कि F मूल्य जो क्रमशः 1.141, .006 और 1.207 है जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। जो दर्शाता है कि शून्य परिकल्पना के समूहों में परिवर्तनशीलता समान है, अस्वीकृत नहीं होती। अतः कहा जा सकता है कि समूहों में सजातीयता विद्यमान है।

पंक्ति 'अ' व 'स', सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि लब्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि का 't' मान 7.084 और −5.223 है जो 0.01 के सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह प्रमाणित करता है कि संबंधित आँकड़ों में सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। जबकि पंक्तियाँ 'अ' और 'ब' दर्शाती हैं कि परिकल्पना $H_03(1)$, $H_03(3)$ कि सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत होती है। जबकि पंक्ति 'ब' दर्शाती है कि उपलब्धि अभिप्रेरण का 't' मान −.302 जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना $H_03(2)$ कि सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरण में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत नहीं होती।

तालिका 3 को ध्यानपूर्वक देखने के बाद यह भी ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि लब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि के अंकों का माध्य क्रमशः74.96, 136.92 और 72.56 है, तो वहीं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि लब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि के अंकों का माध्य क्रमशः 71.51, 137.29 और 76.22 है। इनका माध्य मूल्य बताता है कि सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। जबकि उपलब्धि अभिप्रेरण के माध्य में

तालिका 3 — सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

	विभिन्न पैमाने	सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी (N=411)		गैर-सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी (N=481)		't' मान	लेवेंस टेस्ट मान
		माध्य	*मानक विचलन*	*माध्य*	*मानक विचलन*		
(अ)	संवेगात्मक बुद्धि	74.96	7.83	71.51	6.67	7.084**	1.141*
(ब)	उपलब्धि अभिप्रेरण	136.92	18.607	137.29	18.578	−.302	.006*
(स)	शैक्षिक उपलब्धि	72.56	9.98	76.22	10.80	−5.223**	1.207*

** सार्थकता स्तर= .01, *सार्थकता स्तर= .05

अंतर सार्थकता के स्तर पर नहीं है।

प्रस्तुत आँकड़ों के माध्य अंकों को देख कर ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि गुणांक, गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों से अपेक्षाकृत अधिक है। यह सांख्यिकीय परिणाम हैरान करने वाले हैं। सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का अधिक पाया जाना अवश्य ही उन परिस्थितियों का परिणाम हो सकता है, जिनमें उनका पालन-पोषण होता है। सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों पर अनेक ज़िम्मेदारियाँ होती हैं जिसके कारण उन्हें अपने संवेगों पर नियंत्रण रखना आ जाता है। सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में उपलब्धि अभिप्रेरण में सार्थक अंतर ना पाया जाना यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी भी अपनी उपलब्धि को लेकर प्रेरित हैं। परंतु शोधक ने पाया कि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि गुणांक, गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों से कम हैं, ये आँकड़े हमारी शैक्षिक व्यवस्था पर सवाल उठाते हैं। अपनी उपलब्धि के लिए प्रेरित होते हुए भी सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम होने के कारणों में संसाधनों की कमी, अप्रभावी अधिगम प्रक्रिया, परीक्षा की अपूर्ण तैयारी जैसे कई कारण सम्मिलित हो सकते हैं।

परिकल्पना H_04 — आवासीय और गैर-आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है

तालिका 4 में लेवेंस टेस्ट के परिणामों को ध्यानपूर्वक देखने के बाद ज्ञात होता है कि F मूल्य जो क्रमशः .729, 1.140 और 1.454 है जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह प्रदर्शित करता है कि शून्य परिकल्पना कि समूहों में परिवर्तनशीलता समान है, अस्वीकृत नहीं होती। अतः कहा जा सकता है कि समूहों में सजातीयता विद्यमान है।

तालिका 4 से स्पष्ट है कि आवासीय तथा गैर-आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि लब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण तथा शैक्षिक उपलब्धि का 't' मान 8.825 और 4.611 तथा 5.553 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह प्रमाणित करता है कि संबंधित आँकड़ों में आवासीय तथा गैर-आवासीय विद्यालयों

तालिका 4 — आवासीय एवं गैर-आवासीय विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

	विभिन्न पैमाने	आवासीय विद्यार्थी (N=429)		गैर-आवासीय विद्यार्थी (N=463)		't' मान	लेवेंस टेस्ट मान
		माध्य	*मानक विचलन*	*माध्य*	*मानक विचलन*		
(अ)	संवेगात्मक बुद्धि	75.29	7.32	71.07	6.95	8.825**	.729
(ब)	उपलब्धि अभिप्रेरण	140.07	18.95	134.39	17.86	4.611**	1.140*
(स)	शैक्षिक उपलब्धि	76.55	9.71	72.67	11.02	5.553**	1.454

** सार्थकता स्तर= .01, * सार्थकता स्तर= .05

के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। अतः कहा जा सकता है कि परिकल्पना $H_0$4(1), $H_0$4(2), $H_0$4(3) कि संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत होती है।

तालिका 4 को ध्यानपूर्वक देखने के बाद यह भी ज्ञात होता है कि आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि लब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि के अंकों का माध्य क्रमशः 75.29, 140.07 और 76.55 है, तो वहीं गैर-आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि लब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि के अंकों का माध्य क्रमशः 71.07, 134.39 और 72.67 है। इनका माध्य मूल्य बताता है कि आवासीय तथा गैर-आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

प्रस्तुत आँकड़ों के माध्य अंकों को देखकर ज्ञात होता है कि आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि लब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण तथा शैक्षिक उपलब्धि गैर-आवासीय विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। प्रस्तुत सांख्यिकी परिणाम का कारण आवासीय विद्यालयों का प्रभावी पर्यावरण हो सकता है। आवासीय विद्यालयों में विद्यार्थी, शिक्षकों के विशेष निरीक्षण में रहते हैं। जहाँ उन पर अनेक ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। अपने माता-पिता व परिजनों से दूर ये विद्यार्थी अपने संवेगों पर नियंत्रण करना, साथियों के भावों को समझना, परिस्थितियों से समझौता करना सीख जाते हैं। इन्हीं का परिणाम है कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि गैर-आवासीय विद्यार्थियों से बेहतर है।

परिणाम

इस शोध के परिणाम दर्शाते हैं कि संवेगात्मक बुद्धि और उपलब्धि अभिप्रेरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ संबंध है। यह संबंध बहुत मज़बूत नहीं है, परंतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है और निश्चित तौर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। यह शोध यह भी बताता है कि विभिन्न वर्गों में स्वतंत्र चरों का अलग-अलग प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इस शोध से यह पता चलता है कि लड़कों और लड़कियों के संवेगात्मक बौद्धिक स्तर में कोई विशेष भिन्नता नहीं दिखाई पड़ती, जबकि लड़कियों में उपलब्धि अभिप्रेरण स्तर लड़कों की तुलना में अधिक है। परंतु शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होना यह बताता है कि उपलब्धि के प्रति अधिक प्रेरित होते हुए भी लड़कियाँ शैक्षिक उपलब्धि में प्रभावपूर्ण अंतर नहीं बना पा रही हैं अर्थात् कुछ और भी कारक हैं जो लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित कर रहे हैं। शोध परिणामों से यह भी परिलक्षित होता है कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक सबल हैं। वे गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की भाँति अभिप्रेरित भी हैं। परंतु शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर इस बात की ओर संकेत करता है कि कई अन्य कारकों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इस शोध के परिणाम यह भी दर्शाते हैं कि आवासीय विद्यालयों में रहने वाले विद्यार्थियों का भावनात्मक बुद्धि गुणांक और उपलब्धि अभिप्रेरण गैर-आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक

है और इन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक आँकी गई है।

निष्कर्ष

वर्तमान परिवेश में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बहुत ही आवश्यक विषय है। शैक्षिक जगत में नित नए आविष्कार तथा शोध कार्य हो रहे हैं ताकि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार हो। उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि और उपलब्धि अभिप्रेरण जैसे गैर-संज्ञानात्मक कारकों का विद्यार्थियों की सफलता के साथ सीधा संबंध है। विद्यार्थियों की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि उन्हें संवेगात्मक रूप से मज़बूत बनाया जाए। ताकि विभिन्न परिस्थितियों में वे अपनी भावनाओं को नियंत्रित करके सफलता के मार्ग पर निरंतर प्रयासरत रहें तथा उन्हें नियमित रूप से बेहतर उपलब्धि के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है। सरकारी विद्यालयों की छात्राओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। शोध इस ओर भी संकेत करता कि आवासीय विद्यालयों का वातावरण, अनुशासन, नियमित अभिप्रेरण और अभ्यास का प्रभाव विद्यार्थियों की उपलब्धि पर पड़ता है। अतः शिक्षकों, शिक्षाशास्त्रियों, विद्यालयों के प्रबंधकों और अभिभावकों को इस दिशा में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध कार्य के परिणाम वर्तमान शैक्षिक जगत के लिए लाभदायक हो सकते हैं। इस शोध कार्य के परिणाम शिक्षकों, प्रशासनिक अधिकारियों, शोधकों, नीति-निर्माताओं एवं अभिभावकों के लिए कैसे उपयोगी हो सकते हैं। इसका विवरण इस प्रकार है —

- **शिक्षकों के लिए**— इस शोध कार्य के परिणाम शिक्षकों को विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उचित प्रयोग करने लिए प्रेरित करेंगे तथा वे बेहतर उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करेंगे।
- **प्रशासनिक अधिकारियों के लिए** — इस शोध कार्य के परिणाम प्रशासनिक अधिकारियों विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि को बढ़ाने के लिए तथा विद्यार्थियों को नियमित रूप से प्रोत्साहित और प्रेरित रखने के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करने के लिए प्रेरित करेंगे ताकि उनका शैक्षिक उपलब्धि परिणाम अच्छा रहे।
- **शोधकों के लिए**— शोधक इस दिशा में विस्तृत क्षेत्र और व्यापक कारकों पर आधारित शोध करने के लिए प्रेरित होंगे।
- **नीति-निर्माताओं के लिए**— इस शोध द्वारा नीति-निर्माताओं को शैक्षिक व्यवस्था के लिए ऐसी नीतियाँ बनाने में सहायता मिलेगी, जो विद्यार्थियों के गैर-संज्ञानात्मक कारकों के विकास पर भी गौर करेगी व विद्यालय प्रशासन और शिक्षकों को उचित रूप से निर्देशित करेगी।
- **अभिभावकों के लिए**— यह शोध कार्य अभिभावकों को भी प्रेरित और निर्देशित करता है कि वे किशोरावस्था में लड़कों एवं लड़कियों के लिए किस प्रकार का वातावरण व परिस्थितियाँ निर्मित करें, जिससे वे संयमित और अभिप्रेरित रहें।

संदर्भ

अमालू, एन. मेलविना. 2018. इमोशनल इंटेलिजेंस एज़ ए प्रीटिक्टर ऑफ़ एकेडमिक परफोर्मेंस अमंग सेकंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन मुकर्दी मेट्रोपोलिस ऑफ़ बेनुए स्टेट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंटिफ़िक रिसर्च इन एजुकेशन*. 11 (1), पृ. 63–70. http: //www.ijsre.com.

अवान, रिफ्फत-उन-निसा, नौरीन, गज़ाला और मिस. अंजुम नाज़. 2011. ए स्टडी ऑफ़ रिलेशनशिप बिटवीन अचीवमेंट मोटिवेशन, सेल्फ़ कॉन्सेप्ट एंड अचीवमेंट इन इंग्लिश एंड मैथमेटिक्स एट सेकंडरी लेवल. *इंटरनेशनल एजुकेशनल स्टडीज़*. वॉल्यूम 4, नंबर 3, अगस्त 2011.

इलियट, ए. जे., और मैक ग्रेगोर एच. ए. 2001. ए2x2अचीवमेंट गोल फ्रेमवर्क. *जर्नल ऑफ़ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकॉलजी*. 80 (3) पृ. 501–519

कालोज़ी, सबीना. 2010. द रोल ऑफ़ अचीवमेंट मोटिवेशन इन एजुकेशनल एस्पिरेशन एंड परफ़ॉर्मेंस. *जनरल एंड प्रोफेशनल एजुकेशन*. पृ. 42–47. कोज्मिन्सकी यूनिवर्सटी, पोलैंड.

कुमारी, कल्पना और एस. एच. कासिम. 2015. ए स्टडी ऑफ़ अचीवमेंट मोटिवेशन इन रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ़ हायर सेकंडरी स्टूडेंट. *इंडो-इंडियन जर्नल ऑफ़ सोशल साइंस रिसर्च*. वॉल्यूम 11. नंबर 1, अप्रैल 2015, पृ. 56–59.

गोलमेन, डी. 1995. *इमोशनल इंटेलिजेंस*. न्यूयॉर्क, एन. वाई., इंग्लैंड. बैंटम बुक्स, इंक.

डूलेविटज़, वी. और एम. हिग्म्स. 1999. कैन इमोशनल इंटेलिजेंस बी मेज़र्ड एंड डेवलप? *लीडरशिप एंड ऑर्गनाइज़ेशन डेवलपमेंट जर्नल*. 20. पृ. 242–252.

बा. ए. फातुम. 2008. *द रिलेशनिशप बिटवीन इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडमिक अचीवमेंट इन एलीमेंट्री स्कूल चिल्ड्रन*. यूनिवर्सिटी ऑफ़ सेन फ्रांसिस्को कैलिफोर्निया.

बार-ऑन, आर. 2000. इमोशनल एंड सोशल इंटेलिजेंस-इनसाइट्स फ्रॉम द इमोशनल क्योशेंट इन्वेंट्री (ई-क्यू). आर बार-ऑन और जे. डी. ए. पार्कर. (संपादक). *हैंडबुक ऑफ़ इमोशनल इंटेलिजेंस*. सेन फ्रांसिस्को, जोस्सेय बास.

भदौरिया, प्रीती. 2013. रोल ऑफ़ इमोशनल इंटेलिजेंस फ़ॉर एकेडमिक अचीवमेंट फ़ॉर स्टूडेंट्स. *रिसर्च जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल साइंसेज़*. वॉल्यूम 1(2), 2013:5: पृ. 8–12. www.isca.in

मिनी, सप्रे. 2018. ए स्टडी ऑफ़ स्ट्रेस, एंज़ायटी एंड डिप्रेशन इन सेकंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू देयर इमोशनल इंटेलिजेंस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस रिसर्च एंड डेवलपमेंट*. वॉल्यूम 3, इश्यू 1, पृ. 361–366.

मेहर, एल. 2008. कल्चर एंड अचीवमेंट मोटिवेशन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइकॉलजी*. 43: 5, पृ. 917–918.

मैक क्लेल्लैंड, डी. सी. 1985. *ह्यूमन मोटिवेशन*. स्कॉट फोरेस्मा, शिकागो.

———. 1961. द *अचीविंग सोसाइटी*. पृ. xv–512. प्रिंसटन, डी वेन नोस्त्रंद कंपनी.

मैक क्लेल्लैंड, डी.सी. और डी.जी. विंटर. 1969. *मोटिवेटिंग इकोनोमिक अचीवमेंट*. फ्री प्रेस, न्यूयॉर्क.

मैज़तुल अकमल मोहम्मद, मोहज़न नोर्हस्लिंदा हसन, नोर्हफिजाह अब्दुल हलील. 2013. द इन्फ्लुएंस ऑफ़ इमोशनल इंटेलिजेंस ऑन एकेडमिक अचीवमेंट. *प्रोसेडिया-सोशल एंड बिहेवियरल साइंसेज़*. 90, 2013: 303–312. एल्ज़ेवियर www.sciencedirect.com

युसूफ, एच. टी. युसूफ, ए. और ए. आई. गाम्बरी 2015. इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ़ द स्टूडेंट्स-टीचर्स इन रिलेशन टू देयर फ़्यूचर प्रोडक्टिविटी. द *अफ्रीकन सिम्पोज़ियम*. वॉल्यूम 15, नंबर-1.2015:7. पृ. 25–34.

रॉय बबली, सिन्हा रश्मि और सपना सुमन. 2013. इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडमिक अचीवमेंट मोटिवेशन अमंग एडोलसेंस— ए रिलेशनशिप स्टडी. *जर्नल ऑफ़ आर्ट्स, साइंस एंड कॉमर्स*. वॉल्यूम IV, इश्यू 2013: 2: पृ. 126–130. www.researchersworld.com

लब्बी, एस. लूनेंबर्ग एफ़. सी. स्लेट जे. आर. 2012. *इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडमिक सक्सेस – ए कन्सेप्च्युअल एनालिसिस फ़ॉर एजुकेशनल लीडर्स*. एन.वी.पी.इ.ए. वर्जन – 1.2: 2012.

लेस्ली, के. 2007. द *इम्पैक्ट ऑफ़ इमोशनल इंटेलिजेंस ऑन द एकेडमिक परफ़ोर्मेंस ऑफ़ एट-रिस्क हाई स्कूल स्टूडेंट्स*. यूनिवर्सिटी ऑफ़ द इनकानेर्ट.

सेथ, आर. लैंगली और एम. बार्ट विलियम. 2017. *एक्ज़ामिन सेल्फ़-रेगुलेटरी फ़ैक्टर्स डेट इंफ्लुएंस द एकेडेमिक अचीवमेंट ऑफ़ अंडरप्रिपेर्ड कॉलेज स्टूडेंट्स*. वॉल्यूम 25, इश्यू-1 आरटीडीई 10.http://about.jstor.org/terms

https://www.researchgate.net/publication/287999909_EMOTIONAL_INTELLIGENCE_OF_STUDENT_-TEACHERS_IN_RELATION_TO_THEIR_FUTURE_PRODUCTIVITY

https://www.yourcoach.be/en/employee-motivation-theories/mcclelland-achievement-and-acquired-needs-motivation-theory.php